"वाराणसी स्थित संत रविदास मंदिर : उत्तर भारत में दलितों का स्वतंत्रोत्तर काल में धार्मिक परिवेश

शोध संक्षिप्तिका

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र

विषय में एम0 फिल0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

मास्टर ऑफ फिलॉसफी

(एम0 फिल0)

शोधार्थी

आरती शर्मा

नामांकन सं0—519 / 17

शोध निर्देशक

डा0 शूरा दारापुरी

एच.ओ.डी.

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

इतिहास विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ,उ0प्र0

2019

शोध संक्षिप्तिका

"वाराणसी स्थित संत रविदास मंदिर : उत्तर भारत में दलितों का स्वतंत्रोत्तर काल में धार्मिक परिवेश"

परिचय–

हमारे भारतीय समाज में दलित शब्द का अर्थ क्या है दलित वो है, जो पहले अपने कार्यों के अनुसार अस्पृश्य था और अब अपनी जाति के अनुसार अस्पृश्य है

ऋग्वेद के पुरूष सुक्त में इसे बताया गया है कि जिसके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र से ये मानव जाति को बांटने वाले 4 वर्ण आधार है। इसके तहत युग पुरूष की मुख से ब्राह्मण का जन्म हुआ, क्षत्रिय का जन्म इनकी भुजाओं से, वैश्य का जन्म जंघावों से तथा अन्त में शुद्र जाति का जन्म इनके पैर के अंगूठे से हुआ अर्थात ब्राह्मण का कार्य होगा विद्या देना तथा विद्या को ग्रहण करना, क्षत्रिय का कार्य भुजा बल से लोगों की रक्षा करना, वैश्य का जन्म व्यापार करने के लिए हुआ तथा शुद्र का जन्म अपने से ऊँचे इन तीनो वर्णों की सेवा करने के लिए हुआ था।

प्राचीन समय से लेकर आजादी के वर्ष तक दलितों की स्थिति में कई उतार–चढ़ाव तो आये परन्तु ये उतार–चढ़ाव कभी दलितों को सभी सामाजिक और धार्मिक स्थिति को सुधारने में पूर्णतः सफल नहीं हो पायें

जब स्वयं हिन्दू जाति के स्वर्ण हिन्दू अपने ही बनाये नियमों के आधार पर वर्ण में शुद्र के निम्न स्थान देकर उन पर शोषण करना वैद्य मानने लगे तो यह बहुत आवश्यक हो गया है उनका उद्धार किया जाय।

इस शोध के विषय के अनुसार दलितों के स्थिति पर प्रकाश डालना अति आवश्यक है साथ ही उस महान व्यक्ति के बारे में भी लोगों को जानकारी देना है, जो दलितों के लिए उनके उद्धारक के रूप में प्रकट हुए।

संत रविदास जी महाराज का जन्म वाराणसी स्थित, सीर गोवर्धन में हुआ था। जाति से चमार और पैतृक कार्य जूता सिलने का था। वे अपनी आजीविका के लिए जो कमाते उसका कुछ हिस्सा अपने पास रखते थे बाकि वे लोगो की मदद के लिए दान कर दिया करते थे।

अपनी थीसिस में संत रविदास मंदिर के ऊपर हमने ग्रहनता से अध्ययन किया है। जिसमें उनके संत होने के साथ–साथ लोगो के लिए एक उद्धारक के रूप में परिवर्तित होने का सम्पूर्ण ज्ञान दिया गया है।

बचपन से ही प्रखर बुद्धि के बालक होने के बावजूद भी गरीबी और जाति की प्रताड़ना को सहकर संत रविदास आगे बढ़े। अपने विद्यालय से जाति भेद के कारण निकाले लगे रविदास जी ने घर पर ही अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। परन्त शीघ्र ही आर्थिक स्थिति अनुकूल न होने के कारण वे अपने पिता का जूता सिलने में हाथ बटाने लगे। परन्तु प्रखर बुद्धि की चमक छुपती नही है इसलिए जो कोई भी उनके द्वार पर माता रविदास जी अपनी बातों से उसको मंत्र मुग्ध कर देते है।

उनके ज्ञान की चर्चा धीरे–धीरे समाज में फैलने लगी परन्तु निम्न जाति के किसी व्यक्ति की इतनी प्रखर बुद्धिमत्ता को लोगो ने नकार दिया। इसका रविदास पर कोई प्रभाव न हुआ। वे जानते थे जो मनुष्य जात–पात के भेद के बिना उनके समक्ष आएगा, वो उनका (रविदास) की ज्ञान ज्योति के प्रकाश से दूर नहीं रहा पाएगा।

समय के साथ–साथ रविदास ने अपने ज्ञान को और बढ़ाया वे लोगो के लिए चमत्कारिक संत के रूप में ऊभरे। उन्होंने मानव जीवन में समाजिक महत्व तथा आध्यात्मिक महत्व पर बहुत जोर दिया।

चमार जाति से होने के वाबजुद भी वे ईश्वर में विश्वास रखते है। वे कहते थे कि "भगवान को पाने के लिए मंदिरों में जाने की आवश्यकता नहीं होती जिस व्यक्ति का मन शान्त और स्वच्छ होता है भगवान उसमे स्वयं ही निवास करते है।" उनके

दोहे, वाणी विचार आज भी गुरू ग्रंथ साहब में संकलित है रविदास जी को मानने वालो में एक बड़ा हिस्सा उन लोगो का है जो दलित है, दलित वे जो समाकि, आर्थिक जातिय रूप से पिछडे है।

रविदास जी अपने कार्य के प्रति बहुत आदर करते है, जब लोग उन्हे चमड़े के व्यवसाय के कारण नीचे दिखाते तो वह कहते कि भगवान ने सभी मनुष्य जाति को मॉस और हड्डी के ढ़ाचे में रखा है।

सभी के पास एक सा शरीर है, मनुष्य स्वयं चमड़े (खाल) का बना है तो भला मुझसे कैसा भेद, मे भी सभी की तरह हूँ।

रविदास जी का एक ही संकल्प था जिसको पूरा करने के लिए इन्होने समाज को अपना जीवन दे दिया।

डॉ. अम्बेडकर के विचारों मे–

इसी प्रकार के विचारो का निर्वाह हम आधुनिक काल में डॉ. भीम राव अम्बेडकर के अन्दर भी देखते है। अपने अध्ययन में स्वतंत्रता से पूर्व रविदास जी को तथा स्वतंत्रोत्तर काल में डॉ. अम्बेडकर पर विस्तृत चर्चा की है। जिस प्रकार संत रविदास जी ने अपने बचपन से ही जाति हीनता का भाव समाज से पाया था वही बहिष्कार अम्बेडकर को भी उनके बचपन में भी झेलना पड़ा था। यह हमरा दुर्भाग्य है कि हम ऐसे समाज मे रहते है जहॉ जाति भेद, रंग भेद , आर्थिक भेद इत्यदि सहने पड़ते है। डॉ. अम्बेड़कर ने इन सभी भेद भाव पूर्ण नीतियों से समाज को बाहर लाने के लिए तथा दलितो को मानसिक जंजीरो को तोड़ने के लिए राजनीति का सहारा लिया, शिक्षा का सहारा लिया तथा साथ ही महिलाओं को भी समाज में उच्च स्थान देने का अथक प्रयास किया।

यही कारण था कि वे भारत जैसे विभिन्ताओं से भरे हुए देश को जहॉ हर कदम पर जाति, रंग, रूप, खान–पान, पहनावा यहाँ तक ही सोच भी बदल जाती है, उस

देश के संविधान को बनाने का सौभाग्य मिला तो उन्होने सभी का अधिकार देते हुए बिना किसी भी तरह के भेद–भाव के संविधान में समानता के अधिकार को "स्वतंत्रता के अधिकार" को ससम्मान स्थान दिया।

वाराणसी के संत रविदास मंदिर पर अध्ययन करते हुए हमें इसी मानसिक विकृती का आभास होता है जिसके कारण मंदिर के निर्माण में 25 वर्षो का लम्बा समय लग गया। इसके विषय में हमने चर्चा की, मंदिर निर्माण की जिन परिस्थितियों में निर्माण किया गया उससे यह पता चलता है, कि दलित को आगे बढ़ता देख बहुत से ऐसे असमाजिक तत्व है जो मानिसिक विकृती के कारण मनुष्य को दलित, उच्च, नीच गरीब अमीर जैसे शब्दों में बाँध देता है यह कही से भी शिक्षित समाज की पहचान नहीं है

शोध में हमने रविदास जी के जातिवाद विरोधी ज्ञान के पश्चात् लोगो में होने वाले बदलावों तथा समाज में होने वाले बदलावो विषय में जानकारी मिलती है।

शोध का उद्देश्य–

हमारा उद्देश्य अध्ययन के माध्यम से संत रविदास जी के ज्ञान के द्वारा समाज की स्थिति को जानना है ।

विशेष रूप में वाराणसी के संदर्भ मे–

1. दलित समाज की शिक्षा का विकास?

2. समाज में दलितों को सम्मानित स्थान की प्राप्ति किस स्तर पर?

3. लोगो का जातिवाद के प्रति क्या नजरिया?

वास्तव मे संत रविदास जी के महान भेद–भाव हीन समाज की परिकल्पना किन उद्देश्यो तक सफल रही यही इस शोध का महत्वपूर्ण अंग है।

रविदा महाराज के मंदिर की समाज के परिपेक्ष में तथा धर्म के परिपेक्ष क्या स्थिति है? इसका अध्ययन ही हमारा उद्देश्य है।

परिकल्पना–

1. संत रविदास महाराज अपने जीवन में जिन जातिभेद की अमानवीय यातनाओं को देख चुके थे वे अपने जीवन के बाद के वर्षो तक उस मानसिकता को कम करने में सफल रहे थे।

2. उन्होंने शिक्षा के माध्यम से तथा अपनी वाणी के माध्यम से जन–जागरण को जाति–पाति की विकट मानसिकता से निकालने का प्रयास किया क्योंकि वे सभी लोग जो अपनी दीन–हीन स्थिति एवं द्वेष की भावना से पीड़ित थे, उन्हे रविदास जी के रूप में सफलता का मार्ग मिला सका ।

3. रविदास मंदिर अनेकों संघर्षो को देखने के बाद भी सफलता पूर्वक खड़ा हुआ और लोगों के मन में विश्वास की प्रेरणा जगायी।

शोध की पद्धति–

प्रस्तुत शोध की मुख्य पद्धति में सर्वेक्षणात्मक, विवेचनात्मक तथा अवलोकनात्मक एवं साक्षात्कार विधाओं का उपयोग है। जिसके तहत बनारस क्षेत्र का भ्रमण व अवलोकन करके सामग्री एकत्रित किया जाएगा। जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़े, शोध रिपोर्ट, ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकायें इत्यादि सम्मिलित होगें।

शोध अध्याय की रूपरेखा–

अध्याय 1– प्रस्तावना

अध्याय 2– स्वतंन्त्रता के पश्चात् उत्तर भारत के धार्मिक परिवेश में दलितो की स्थिति

अध्याय 3– रैदासिया धर्म की पृष्टभूमि

अध्याय 4– संत रविदास मन्दिर का चित्रण

अध्याय 5– मन्दिर के निर्माण संघर्ष की जानकारी

अध्याय 6– निष्कर्ष

इस रूपरेखा मे माध्यम से संत रविदास सहारा जी के उद्देश्यों की पूर्ति तथा उनके सच होते रवप्न को अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया गया है।